व्यक्तिगत ऋण

जानकारी के बाद ही करें सौदा

कई बैंक व्यक्तिगत उपयोग के लिए ऋण देते हैं और उनमें से एक ऐसे बैंक का चुनाव करना जिसके पास सबसे बेहतर योजना हो, आम उपभोक्ता के लिए कठिन कार्य है। या तो वह अपने दोस्तों से कहेगा जिनके पास इसकी आंशिक जानकारी हागी या फिर बैंक के एजेंट पर उसकी निर्भरता होगी, जिसका लक्ष्य या तो अपना मासिक लक्ष्य (टारगेट) पूरा करना होगा या फिर ऐसा ऋण बेचना होगा जिससे उसे (एजेंट) अधिक से अधिक लाभांश (कमीशन) मिल सके। इसलिए ऐसे में उपभोक्ताओं के लिए तुलना को व्यवहारिक करने के लिए, 'कंस्यूमर वॉयस' ने प्रचलित बैंकों के द्वारा दिये जा रहे व्यक्तिगत ऋण पर तुलानात्मक अध्ययन करवाया है। यह तुलना उन मानकों पर आधारित थी जो आम आदमी के बैंक या फिर ऋण योजनाओं के चुनाव के निर्णय को प्रभावित करता है।

सुभाष तिवारी और गोपाल रवि कुमार की रिपोर्ट

ऋण मिलने की प्रक्रिया काफी सरल होती जा रही है और भारतीय रिजर्व बैंक के आदेश के अनुसार उपयुक्त व्यक्तियों को सारी प्रक्रियाओं के पूरा होने के एक महीने के अंदर ऋण संवितरण (डिस्बर्सल) मिल जाना चाहिए। ऐसा देखा जा रहा है कि व्यक्तिगत उपयोग के लिए ऋण की मांग का चलन बढ़ा है। पहले के मुकाबले अब हम में से बहुत से लोग ऐसा मानने लगे हैं कि व्यक्तिगत ऋण आकस्मिक खर्चों के लिए सबसे बेहतर विकल्प है जैसे विदेश भ्रमण, शादी या फिर अन्य आयोजन जिन्हें अब तक गैर जरूरी माना जाता था। हालांकि व्यक्तिगत ऋण के नियमों और शर्तों को पढ़े बिना इसका चुनाव कर लेने से उसकी सेवाएं एक अविवेकपूर्ण कदम हो सकता है और कीमत काफी अधिक हो सकती है।

कई बैंक और वित्तीय संस्थान व्यक्तिगत ऋण पर फायदेमंद ब्याज दरों के साथ लुभावनी योजनाओं की पेशकश करते हैं। व्यक्तिगत ऋण प्रदान करने वाले प्रत्येक संस्थान में पात्रता प्रदान करने और कर्ज अदा करने के अलग–अलग मानदंड होते हैं, जिनकी समीक्षा और तुलना करना चाहिए ताकि ऋण का आवेदन करने और बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने से पहले पूरी जानकारी हो।

ऋण संवितरण के लिए आवश्यक 30 दिनों की अवधि

• भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने वित्तीय बैंकों द्वारा ऋण पर निर्णय लेने/ऋण भुगतान में की जा रही अत्यधिक देरी में भारी कमी लाई है। 1 सितंबर 2014 की नई अधिसूचना में उन्होंने सारे बैंकों से कहा है कि ऋण देने के निर्णय पर पहुंचने से पूर्व पूरी मेहनत की जाए ताकि समय पर और पर्याप्त मात्रा में ऋण उपलब्ध हो सके।

• आरबीआई ने का है कि बैंकों को आरबीआई परिपत्र (सर्कुलर) में ऋण संवितरण की अवधि 30 के दिनों के भीतर लिखनी चाहिए। बैंकों से यह उम्मीद की जाती है कि वो ऋण प्रदान करने के निर्णय की समयसीमा का उल्लेख उचित तरीके से उनकी वेबसाइट, सूचना पट्ट, उत्पाद साहित्य आदि के जरिए करे।

• प्रमुख बैंकर्स का मानना है कि यह कदम बैंकों द्वारा प्रक्रिया में की जाने वाली देरी में कटौती करेगा। छोटे ऋण संवितरण के लिए पहले से ही प्रत्येक बैंक के अपने आंतरिक दिशानिर्देश और समयसीमा होती है। आरबीआई द्वारा सुझाए गईकेंद्रीय व्यवस्था मामले को और भी तेजी से पूरा करने में मदद करेंगे।

• आरबीआई ने ऋणदाताओं के लिए उचित व्यवहार संहिता (फेयर प्रैक्टिस कोड) का दिशानिर्देश जारी किया गया है, जिसके अंतर्गत 2,00,000 रुपए तक के ऋण हेतु आए आवेदन को स्वीकार करते समय ऋण संवितरण की समय सीमा का उल्लेख होना चाहिए।

पात्रता की सामान्य शर्तें

◆ *वेतनभोगियों के लिए*

- एक बैंक खाता होना चाहिए, जिसमें नियमित रूप से वेतन आता हो। जिस बैंक में ऋण का आवेदन किया गया है उसी बैंक में खाता हो यह जरूरी नहीं। हालांकि बैंक इस प्रकार के ऋण में अपने उपभोक्ताओं को अधिक प्राथमिकता देते हैं।
- उसकी नौकरी स्थायी होनी चाहिए क्योंकि बैंक अनिश्चित नौकरी वाले व्यक्ति को ऋण नहीं देता है।

- नौकरी या रोजगार की अवधि शीघ्र ऋण जारी करवाने में अहम भूमिका निभाती है।
- निवास स्थान स्थायी होना चाहिए या किराये अथवा पट्टा समझौता (लीज एग्रीमेंट) के साथ होना चाहिए।
- निवास स्थान का साक्ष्य जैसे मतदाता परिचय पत्र, पासपोर्ट और आधार कार्ड, पहचान साक्ष्य जैसे कर्मचारी पहचान पत्र और पैन कार्ड बैंक आवेदन पत्र के साथ विधिवत रूप से स्वसत्यापित रूप में प्रस्तुत करना होता है। आवेदनकर्ता के कम से कम दो फोटो की जरूरत होती है।
- हालांकि व्यक्तिगत ऋण लेने का उद्देश्य बताने की आवश्यकता नहीं होती है, बैंक कुछ कारणों से विवरण मांगना पसंद करता है।
- यदि आपके पास पहले से ही कोई ऋण है जैसे कार का ऋण या घर का ऋण, तो इन कटौतियों को खाते में लाया जाता है ताकि कुल वेतन में हो रही कटौती का हिसाब लगाया जा सके और उपयुक्त ऋण राशि तय की जा सके।
- आपका सिबिल आंकड़ा भी बैंक द्वारा प्रदान किये जा रहे व्यक्तिगत ऋण राशि तय करने में अहम भूमिका निभाता है। उपर्युक्त ऋण राशि पाने का कोई तय मानदंड नहीं है, क्योंकि हर बैंक का आकलन करने

कंस्यूमर वॉयस की सिफारिश

	निजी क्षेत्र के बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
सर्वश्रेष्ठ	आईसीआईसीआई बैंक	विजया बैंक
बेहतर	एक्सिस बैंक	यूनियन बैंक
अच्छा	कोटक महिन्द्रा	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

**गहन शोध और उपभोक्ताओं के नजरिए से बैंकों द्वारा की जाने वाली पेशकश की तुलना पर आधारित*

कंस्यूमर वॉयस की प्राथमिकता (मानदंड) अंक 100	बैंक द्वारा व्यक्तिगत ऋण	यूनियन बैंक	विजया बैंक	पीएनबी	ओरिएंटल बैंक	
15	अधिकतम ऋण (लाख में)	5 (5)	5 (5)	10 (10)	3 (5)	
10	प्रोसेसिंग मूल्य (प्रतिषत में)	0.5 (7)	2000+एसटी (10)	1. 8+एसटी (4)	0.5 (7)	
15	ब्याज दर (प्रतिशत में)	15 (11)	14.3(11)	16.25 (5)	13.5 (15)	
5	भुगतान की अधिकतम अवधि (महीने में)	60 (5)	60 (5)	60 (5)	60 (5)	
10	जमानत/प्रतिभूति	नहीं (10)	नहीं (10)	हां (0)	हां (0)	
10	जमानतदार (गारंटर)	हां (0)	हां (0)	हां (0)	हां (0)	
5	बीमा कवर	नहीं (10)	नहीं (10)	नहीं (10)	नहीं (10)	
15	स्वीकृत होने में लगने वाला समय (दावा किया गया समय)	10+ (2)	10+ (2)	10+ (2)	10+ (2)	
5	ऑनलाइन आवेदन	हां (5)	हां (5)	हां (5)	नहीं (0)	
10	पूर्व भुगतान शुल्क	नहीं (10)	नहीं (10)	नहीं (10)	नहीं (10)	
कुल		65	68	51	54	

एस टी: *सर्विस टैक्स (सेवाकर)*
नोट: ए) *हम लोगों ने उत्पाद की जानकारी बैंक की वेबसाइट से प्राप्त की है।*
बी) *उपभोक्ताओं से बात करने पर हमें कुछ बातों पर विशेषाभासी राय प्राप्त हुई जो बैंक की वेबसाइट पर किये गए दावों से अलग हैं। इसलिए हमने उपभोक्ताओं के नजरिये के आधार पर बिंदुओं को निर्धारित किया है।*

का तरीका अलग–अलग है। आमतौर पर जो स्वीकृत तरीका है वह यह है कि वेतन से होने वाली कटौती की, प्रदान किये जाने वाले ऋण की कटौती सहित अधिकतम सीमा को 50 प्रतिशत तक तय कर देना। यदि आप इस सीमा के अंतर्गत आते हैं, तो उपर्युक्त राशि कुल मासिक वेतन या फॉर्म 16 अथवा आयकर विवरणी (इनकम टैक्स रिटर्न) में उल्लेखित कुल टैक्स योग्य आय का करीब 10/12 गुना हो सकती है। राष्ट्रीयकृत बैंकों और निजी बैंकों द्वारा की गई गणणा (निजी बैंक शुद्ध आय के आधार पर गणना करते हैं) में भी इसमें अंतर आ सकता है।

◆ *स्वरोजगार वालों के लिए*

उन लोगों के लिए जो अपना व्यापार करते हैं या स्वतंत्र रूप से काम करते हैं, उन पर निम्न स्थितियां लागू होंगी।

- भले ही उसे वेतन न मिलता हो, लेकिन व्यापार से होने वाली आय का विवरण परिलक्षित होता है जो उसके कुल वेतन को जांचने का आधार होगा। उसे अपनी आय की जानकारी देने की भी जरूरत पड़ सकती है।
- उद्योग कैसा चल रहा है वह ऋण संवितरण को प्रभावित करने का एक कारण बन सकता है। नये उद्योग की स्थिति में बैंक समर्थक प्रतिभूति (कोलेटेरल सिक्योरिटीज) जैसे बैंक में जमा राशि और ऋणपत्र पर जोर दे सकता है, साथ ही उपयुक्त कुल कीमत की एक या एक से अधिक व्यक्तिगत जमानत देनी पड़ सकती है।

	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	बैंक ऑफ इंडिया	कैनरा बैंक	एचडीएफसी बैंक	आईसीआईसीआई	करूर वैस्या	एक्सिस बैंक	कोटक महिंद्रा
	15 (15)	10(10)	1(5)	15 (15)	15 (15)	100(15)	15 (15)	15 (15)
	1.01 (4)	2 (4)	1 (7)	2.5(2)	2.25 (2)	0.4(7)	2 (4)	3(2)
	15 (11)	15.2 (5)	14. 2 (11)	15.75 से 20 (5)	13.4 (15)	17 से 19. 75 (5)	15.50 से 24 (5)	15 से 24 (5)
	60 (5)	60 (5)	36 (2)	60(5)	60(5)	36 (2)	60 (5)	60 (5)
	नहीं (10)	हां (0)	हां (0)	हां (0)	नहीं (10)	हां (0)	नहीं (10)	नहीं (10)
	हां (0)	हां (0)	हां (0)	हां (0)	नहीं (10)	हां (0)	हां (0)	नहीं (10)
	हां (0)	नहीं (10)	नहीं (10)	हां (0)	हां (0)	हां (0)	हां (0)	हां (0)
	10+ (2)	10+ (2)	10+ (2)	0 से 5(10)	6 से 10(5)	10+ (2)	6 से 10 (5)	6 से 10 (5)
	हां (5)	नहीं (0)	नहीं (0)	हां (5)	हां (5)	नहीं (0)	हां (5)	हां (5)
	नहीं (10)	नहीं (10)	नहीं (10)	हां (0)	हां (0)	नहीं (10)	नहीं (10)	हां (0)
	62	46	47	42	67	41	59	57

◆ *पेशेवरों के लिए*

डॉक्टर, वकील, लेखाकार, वास्तुकार आदि पेशेवरों के लिए– निम्नलिखित अतिरिक्त स्थितियों की पूर्ति करनी पड़ सकती है।

- आवेदन पत्र के साथ उनकी योग्यता की सत्यापित प्रति जमा करना होता है।
- चूंकि कुछ बैंकों के पास इन पेशेवरों के लिए विशेष व्यक्तिगत ऋण योजनाएं होती हैं जो काफी कम ब्याज दरों पर उपलब्ध होती हैं। बैंक उन्हें पेशे से संबंधित कुछ विवरण देने के लिए कह सकता है जैसे रसीद/भुगतान/या आय/व्यय खाते की प्रति।

व्यक्तिगत ऋण को 'साफ' या 'असुरक्षित' ऋण भी कहा जाता है, क्योंकि यह बिना किसी मूर्त जमानत (टेंजिबल सिक्योरिटी) जैसे संपत्ति, सावधि जमा या ऋणपत्र के लिया जा सकता है। आप एक भरोसेमंद व्यक्ति हैं और आप ऋण पर कोई धोखाधड़ी नहीं करेंगे उसके लिए केवल व्यक्तिगत जमानत देनी पड़ती है।

फायदे

- सबसे पहला और महत्पूर्ण फायदा है शीघ्रता, जिसमें ऋण आवेदन स्वीकृत हुआ हो या अस्वीकृत।
- अधिकांश स्वीकृत व्यक्तिगत ऋण में बैंक किसी भी जमानत प्रतिभूति या कुछ मामलों में व्यक्तिगत प्रतिभूति/जमानत देने के लिए बाध्य नहीं करता। इसलिए यह ऋण मांगने वालों के लिए लाभप्रद है उस पर अपने सहकर्मियों या मित्रों को व्यक्तिगत जमानत देने के लिए राजी करने का कोई दबाव नहीं होता।
- अधिकांश बैंक मार्जिन घटक (जोखिम में ऋण लेने वाले की हिस्सेदारी) के लिए नहीं कहती। इसलिए उपभोक्तओं को मार्जिन राशि का इंतजाम करने के लिए यहां वहां भटकने की कोई आवश्यकता नहीं होती।
- कई मामलों में ऋण का उद्देश्य महत्वहीन होता है।
- उपभोक्ताओं को अपना उद्देश्यबताने के लिए किसी प्रकार के साक्ष्य को जमा करने की चिंता करने की जरूरत नहीं है।
- सामान्य कागजी कार्रवाई की जरूरत होती है। किसी प्रकार की विस्तृत प्रक्रियाओं की जरूरत नहीं होती।
- मासिक अदायगी अब उपभोक्ताओं के लिए उपयुक्त बना दी गई है, जिसमें बैंक प्रत्येक किस्त की राशि पोस्ट डेटेड चेक्स (पीडीसी) के जरिये लेता है और नियत तारीख पर उसे प्रस्तुत कर देता है। इस कार्य के लिए उपभोक्ता को बैंक जाने की जरूरत नहीं होती। ऋण की किस्त का भुगतान उपभोक्ता के बचत खाते से होता है, बैंक लिखित में निर्देश लेता है और उसके अनुसार कार्य करता है।

नुकसान/सीमाएं

- इस प्रकार के ऋण के लिए ब्याज दरें सबसे अधिक होती हैं। यह एक महंगा सौदा है क्योंकि सुरक्षित गृहऋण की तुलना में यह एक 'असुरक्षित ऋण है।
- सामान्यतः ऋण की अवधि 60 महीने होती है। बैंक लंबी अवधि का जोखिम लेने के पक्ष में नहीं होते हैं। यह उपभोक्ताओं की जरूरत के अनुसार सीमित हो सकता है।
- बैंक स्रोतों के अनुसार, व्यक्तिगत ऋण के साथ सबसे अधिक जोखिम जुड़ा होता है और इसका अंत अनुपयोग्य आस्तियां (नॉन परफॉर्मिंग एसेट) के रूप में हो सकता है। इसमें नौकरी/अस्थाई बेरोजगारी स्थिति/उपभोक्ता मृत्यु/बिना जानकारी के पते में परिवर्तन आदि हो जाने के कारण भुगतान के बीच में ही रुक जाने का खतरा हो सकता है। वैसे कई बैंक गैर–उपभोक्ताओं को – जिसका ऋणदाता बैंक के साथ पूर्व में कोई लेन–देन का काम न हुआ हो ऋण

नहीं देना चाहत। यह उपभोक्ताओं के सामने विकल्पों को पूरी तरह से सीमित कर देता है जिससे उन्हें अपने घर या कार्यालय के आस–पास ही मौजूद किसी भी बैंक से ऋण लेने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

- अधिकांश बैंक 15 लाख से अधिक ऋण देने का इच्छुक नहीं होते हैं, जबकि उनकी वेबसाइट/विवरण पुस्तिका में इससे कहीं अधिक राशि का दावा करती हैं। इसलिए उपभोक्ता–ऋण लेने वाला अधिक ऋण पाने का लाभ नहीं उठा सकता भले ही वह इसके लिए पात्र हो।
- अधिकांश बैंक ऋण के लेन–देन के लिए व्यक्तिगत जमानत/प्रतिभूति पर जोर देती है ताकि ऋण अनुबंध की विश्वसनीयता बढ़ाई जा सके।

कब खारिज हो सकता है ऋण

◆ खराब क्रेडिट अंक

- अधिकांश बैंक और वित्तीय संस्थान अपनी इच्छा से क्रेडिट की जानकारी देने वाली संस्था या एजेंसी जिसे क्रेडिट इन्फॉर्मेशन ब्यूरो ऑफ इंडिया लिमिटेड (सिबिल) के नाम से जाना जाता है, के साथ जुड़ गई हैं, जहां वो उपभोक्ता के ऋण के लेन–देन (भले ही वो करीबी हो और उनका बैंक के पास कोई बकाया न हो) के वर्तमान/पूर्व क्रेडिट जानकारियों को बांटते हैं।
- बैंक उपभोक्ताओं के क्रेडिट प्रदर्शन पर अपनी आंतरिक क्रेडिट रिपोर्ट और सिबिल को आगे भेज देते है फिर उसके आकलन के आधार पर अंक प्रदान किये जाते है (300 से 900 के बीच कुछ भी)। यही सिबिल भी अपनी वेबसाइट पर अपलोड कर देती है। इस जानकारी को बैंक द्वारा जो सिबिल के सदस्य के रूप में प्रविष्ट हुए हैं थोड़े–थोड़े अंतराल पर सामयिक (अपडेट) करने की जरूरत होती है।
- आप जैसे ही ऋण के लिए आवेदन करते हैं बैंक हमेशा ही जल्द से जल्द सिबिल रिपोर्ट मंगवाती है। यदि आपका उस बैंक/एफआई के साथ लेनदेन या फिर ऋण की अदायगी या क्रेडिट कार्ड का भुगतान सही न हो (जिसे खराब सिबिल अंक कहते हैं, जो 700 से कम हो) तो इसकी काफी आशंका है कि व्यक्तिगत ऋण के लिए किया गया वर्तमान आवेदन खारिज हो जाये।
- कोई भी अपने सिबिल अंक उनकी वेबसाइट (डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट सिबिल डॉट कॉम) पर एक आवेदन पत्र के लिए 470 रुपए देकर ऑनलाइन प्राप्त कर सकता है। सिबिल अंक दिये गए ईमेल आईडी पर पहुंच जाता है। सिबिल आंकड़ों की वजह से ही 80 प्रतिशत ऋण ऐसे लोगों (और बैंक द्वारा स्वीकृत) को मिला है, जिनके अंक 750 से ज्यादा है।

पूर्व बकाया

- बैंक अपने ऐसे दोषियों की सूची बनाकर उसे अपने कंप्यूटर प्रणाली पर डाल देती है जिससे अन्य शाखाएं देख सकें और ऋण लेने वाले के पूर्व रिकॉर्ड की जांच कर सकें। यह जानकारी सिबिल रिपोर्ट के अतिरिक्त है जिसमें अन्य बैंकों के साथ ऋण मांगने वाले की क्रेडिट की जानकारी होती है।

ऋण जमानतदार (गारंटर)

- ऋण लेने वाले आपके मित्र के डिफाल्ट की स्थिति में ऋण अदायगी के लिए आप व्यक्तिगत जमानत के रूप में खड़े हो सकते हैं। हो सकता है यह बात आप भूल गए हों लेकिन सिबिल रिपोर्ट आपको ऋण के लिये दोषी के रूप में दर्शाएगा, भले ही आप केवल जमानतदार हों। इससे आप अचंभित हो सकते हैं लेकिन तंत्र इस प्रकार ही कार्य करता है। इसलिए किसी के लिए व्यक्ति जमानतदार बनने से पहले दो बार सोचें।

ऋण की अधिक देनदारी

- सामान्य तौर पर ऋण के लिये आपकी पात्रता का आकलन करने से पहले बैंक वर्तमान सभी बकाया ऋण, निजी उधारी, आदि को जोड़ती है उपयुक्त राशि प्रदान करने से पहले। ऋण का विस्तार करने से पहले बैंक ऋण–कमाई के अनुपात का आकलन (आमतौर पर बैंक कहती है कि व्यक्तिगत ऋण की अदायगी को मिलाकर

कुल कटौती घर ले जाने योग्य आय/कुल वेतन से 50 से 70 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए) करती है।

नौकरी की स्थिरता

- यदि आप लगातार अपनी नौकरी बदलते हैं या अपना स्थान कई बार बदल चुके हैं, तो यह लोगों की जानकारी में आता है और यह आपके खिलाफ भी हो सकता है, क्योंकि बैंक इस आधार पर आपसे काफी सवाल पूछता है। स्थिर रोजगार करने का रिकॉर्ड बैंक द्वारा आपको ऋण प्रदान करने में एक अहम भूमिका निभा सकता है। हालांकि यह ऋण किसी जमानत प्रतिभूति द्वारा संरक्षित नहीं होती है और रोजगार (विश्वसनीयता) करने के बेहतर रिकॉर्ड और क्रेडिट प्रोफाइल (अच्छे या स्वीकार्य सिबिल अंक) के आधार पर दिया जाता है, बैंक की नजरों में स्थिरता जीवन में सबसे महत्वपूर्ण होती है।

आयकर रिकॉर्ड

- बैंक आपसे आईटीआर के आकलन की पूर्व प्रति के लिए पूछकर या कर की कटौती का स्रोत/पूर्व में आपके वेतन से काटा गया व्यवसायिक कर आपके आयकर प्रोफाइल का गहन आकलन कर सकता है। उन्हें संतोषजनक उत्तर देने में असफल होना आपके रास्ते की रुकावट बन सकता है। इसलिए आपको सलाह देते हैं कि आप अपने नियोक्ता से आय का प्रमाणपत्र/टीडीएसप्रमाणपत्र/फॉर्म16–16 (ए) प्राप्त करें और जब भी जरूरत हो उसे प्रस्तुत कर दें।

पूर्व में खारिज हुआ ऋण

- यदि आपने पूर्व में ऋण या क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन किया है और वह खारिज (जो भी कारण रहा हो) हो गया हो, तो दोबारा आवेदन करने पर हो सकता है कि वह फिर खारिज हो जाये।

आरबीआई के बकायेदार/जानबूझकर बकायेदार

- यदि आपका नाम इसमें है तो यह चिंता की बात है। भारतीय रिजर्व बैंक जानबूझकर बकायेदारों की सूची को अपडेट करता है और उन्हें अपनी वेबसाइट पर डाल देता है। आरबीआई इन हठी बकायेदारों की सूची बैंक के जानबूझकर बकायेदारों (पर्याप्त धन होने के बावजूद ये जान–बूझकर ऋणदाताओं की आंखों में धूल झोंकते हैं) के आधार पर बनाई जाती है।